रंगमंच विज्ञान की पाठ्य सामग्री

अभिनय

अभिनय नाटक का प्रधान तत्व है। समस्त कथावस्तु; चरित्र, अर्थों एवं भावों का प्रकाशन अभिनय द्वारा ही किया जाता है।
अभिनय चार प्रकार का माना जाता है —
आंगिक
वाचिक
आहार्य
सात्विक

आंगिक - शरीर की चेष्टाओं और अंग संचालन द्वारा जो भाव या अर्थ व्यक्त करने की विधि है, वह आंगिक अभिनय कहा जाता है। इसके 3 प्रकार माने गए हैं — शारीर; मुखज; चेष्टाकृत।

वाचिक - वाचिक अभिनय के अंतर्गत स्वर शास्त्र छंद, भाषा प्रयोग, काकु आदि द्वारा भाव और अर्थ का प्रकाशन होता है। इसका संबंध श्रव्योपकथन से है। इसके 3 भेद हैं —
सर्वश्राव्य, अश्राव्य; नियतश्राव्य।

आहार्य - वेशभूषा, अलंकरण, आभूषण, रंगों के प्रयोगादि से जो भाव और अर्थ के संकेत दिये जाते हैं वे आहार्य अभिनय के अंतर्गत आते हैं।

सात्विक - सात्विक अभिनय में सात्विक भावों, हावों आदि का अभिनय आता है। भाव और रसों का अभिनय सात्विक के अंतर्गत माना गया है। इसमें सूक्ष्म अन्तस्थ भावों का प्रकाशन होता है।

Scanned with CamScanner